नईदुनिया

संपादकीय

आपराधिक घटनाओं को सियासी रंग

पश्चिम बंगाल में आपराधिक घटनाओं को अक्सर राजनीतिक रंग दे दिया जाता है। अब तो ऐसी घटनाओं की जांच करने वालों पर हमले की संस्कृति भी विकसित हो चली है। इसका ताजा उदाहरण राष्ट्रीय जांच एजंसी यानी एनआइए के दल पर स्थानीय लोगों का हमला है। दो महीने पहले इसी तरह संदेशखाली में प्रवर्तन निदेशालय के जांच दल पर ग्रामीणों ने हमला कर दिया था।

ताजा घटना मिदनापुर जिले के भूपतिनगर की है। दरअसल, एनआइए कर्मी करीब सवा साल पहले वहां हुए एक बम विस्फोट के मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार करने गए थे। तभी स्थानीय लोगों ने उन पर हमला कर दिया। जांच दल की गाड़ियों के कांच टूट गए। इस घटना पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा है कि जांच दल को रात में वहां जाने की क्या जरूरत थी। क्या उन्हें यह पता नहीं था कि रात के अंधेरे में गांव वाले अनजान लोगों को देख कर हमलावर हो सकते हैं। हालांकि उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि पता नहीं, एनआइए ने स्थानीय पुलिस से सहयोग लिया था या नहीं। जबकि एनआइए अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने स्थानीय पुलिस से सहयोग मांगा था, पर उसका रवैया सहयोगात्मक नहीं था। ममता बनर्जी ने पूछा है कि चुनाव के वक्त में इस तरह गिरफ्तारियां करने की आखिर वजह क्या है। बता दें कि एनआइए जिस व्यक्ति को गिरफ्तार करने गई थी, वह तृणमूल कांग्रेस का नेता है। अब ममता बनर्जी इस घटना को भाजपा के उकसावे पर की गई कार्रवाई बता रही हैं। यह पहली बार नहीं है जब ममता बनर्जी इस तरह अपने किसी नेता या कार्यकर्ता के पक्ष में सीधे मैदान में कूद पड़ी हैं। वे तो एक बार अपने कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के विरोध में सीधे थाने में पहुंच गई थीं। राज्य के पुलिस अधीक्षक की अनियमितताओं के खिलाफ जब सीबीआइ ने पूछताछ की कोशिश की थी, तब भी वे धरने पर बैठ गई थीं। चुनावी हिंसा के मामलों में भी वे अक्सर अपने कार्यकर्ताओं का बचाव और भाजपा कार्यकर्ताओं के उपद्रव पर तल्खबयानी करती रही हैं।

यह ठीक है कि भाजपा और तृणमूल के बीच सियासी रस्साकशी चलती रहती है और यह अक्सर केंद्र-राज्य संबंधों में टकराव बन कर भी उभरती है, मगर क्या हर आपराधिक घटना को सियासी रंग दे देने से राज्य की कानून-व्यवस्था प्रभावित नहीं होती! आखिर कानून-व्यवस्था की जवाबदेही राज्य सरकार की है। बम विस्फोट के जिस मामले में एनआइए जांच कर रही है, उसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी। यह राज्य सरकार की भी चिंता का विषय होना चाहिए कि जिस घर में विस्फोट हुआ, वहां इतना ताकतवर बम पहुंचा कैसे और उसका किस मकसद से इस्तेमाल किया जाना था। आपराधिक घटनाओं को सियासी रंग दे देने का नतीजा यह होता है कि राजनीतिक दलों के बीच हिंसा और प्रतिहिंसा का दौर लगातार चलता रहता है। इसे लेकर पश्चिम बंगाल पर लंबे समय से अंगुलियां उठती रही हैं। चुनाव के दौरान तो व्यापक हिंसा देखी जाती है। इस समय आमचुनाव का माहौल है और ममता बनर्जी अगर एनआइए जांच में सहयोग करने के बजाय इसके पीछे भाजपा का हाथ बता रही हैं, जो जाहिर है, उनके कार्यकर्ताओं को एक तरह से उकसावा ही मिलेगा। इस तरह हिंसा के बल पर कोई राजनीतिक दल अपना आधार बेशक कुछ मजबूत बना ले, पर राज्य की कानून-व्यवस्था कमजोर ही होगी।

रामनवमी, जानिए पूजा का शुभ मुहूर्त, विधि और महत्व

हिंदू धर्म में राम नवमी के त्योहार का विशेष महत्व होता है। वैदिक पंचांग के अनुसार हर वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को राम नवमी का त्योहार बड़े ही धूमधाम उत्साह के साथ मनाया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी तिथि पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जन्म हुआ है। राम नवमी का पर्व चैत्र नवरात्रि का आखिरी दिन होता है। राम नवमी के साथ ही चैत्र नवरात्रि का समापन हो जाता है। राम नवमी पर भगवान राम की विशेष पूजा पूजा और आराधना की जाती है। इस दिन भगवान राम संग माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की पूजा की जाती है। आइए जानते हैं राम नवमी की पूजा विधि, शुभ मुहूर्त और कथा।

राम नवमी तिथि 2024

वैदिक पंचांग की गणना के अनुसार, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि की शुरुआत 16 अप्रैल को दोपहर 01 बजकर 23 मिनट से शुरू हो जाएगी। नवमी तिथि का समापन 17 अप्रैल को दोपहर 03 बजकर 15 मिनट पर होगा। ऐसे में उदयातिथि के आधार पर राम नवमी का त्योहार 17 अप्रैल 2024 को मनाया जा जाएगा।

राम नवमी शुभ मुहूर्त 2024

इस वर्ष राम नवमी पर प्रभु श्रीराम की पूजा के लिए शुभ मुहूर्त का समय 17 अप्रैल को सुबह 11 बजकर 03 मिनट

राम नवमी मध्याह्न का समय- 12: 20

विजय मुहूर्त - दोपहर 02 बजकर 34 मिनट से लेकर 03 बजकर 24 मिनट तक।

गोधूलि मुहूर्त- शाम 06 बजकर 47 मिनट से 07 बजकर 09 मिनट तक।

राम नवमी पूजा विधि 2024

राम नवमी का त्योहार हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार होता है, जिसे देश-दुनिया में बहुत श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया जाता है। राम नवमी के दिन सबसे पहले सुबह जल्दी उठकर स्नान करके पवित्र होकर और साफ-सुथरे कपड़े धारण करें। फिर इसके बाद पूजा स्थल की सफाई करें। हाथ में अक्षत लेकर व्रत करने का संपल्प लें फिर भगवान राम की पूजा-अर्चना पूजन सामग्री के साथ आरंभ करें। सबसे पहले भगवान राम, माता सीता, भाई लक्ष्मण और भगवान हनुमान की प्रतिमा को स्थापित करें और सबको रोली, चंदन, धूप, फूल, माला, इत्र आदि से षोडशोपचार पूजन करें। फिर इसके बाद भगवान राम की पूजा में कई तरह फल, मिष्ठान, फूल और गंगाजल का इस्तेमाल करें। भगवान राम की पूजा में तुलसी के पत्तों और कमल के फूल का प्रयोग अवश्य करें। इसके बाद अपनी इच्छा के अनुसार रामचरितमानस, रामायण और रामरक्षास्तोत्र का पाठ करें। अंत में भगवान राम, माता सीता और हनुमान जी की आरती करते हुए पूजा संपन्न करें। पूजा के बाद सभी प्रसाद वितरित करें।

राम नवमी का महत्व

राम नवमी का त्योहार हर साल बड़े ही उत्साह और भक्तिभाव के साथ पूरे देश में मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान राम विष्णु के सातवें अवतार के रूप में जन्म लिया था। वैदिक पंचांग के अनुसार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान राम का जन्म अयोध्या के राजा दशरथ के यहां बड़े पुत्र के रूप में लिया था। धार्मिक मान्यता के अनुसार राम का जन्म रावण के वध के लिए हुआ था। इस कारण से हर साल राम नवमी का पर्व भगवान राम के जन्म दिवस के रूप में बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है।

वैदिक पंचांग के अनुसार राम नवमी का त्योहार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पड़ता है और यह चैत्र नवरात्रि का आखिरी दिन भी होता है। पूरे देश में इस दिन शक्ति की आराधना के साथ राम नवमी का त्योहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जा जाता है। देशभर इस दिन जगह-जगह धार्मिक जुलूस भी निकाले जाते हैं। राम नवमी के दिन मंदिरों में सुबह से लेकर शाम तक भजन-कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। इस पूरे दिन उपवास रखकर मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन से सीख लिया जाता है। सूर्यास्त के बाद व्रत का पारण करते हुए समापन किया जाता है।

इस दिशा में लगाएं राम दरबार

हर साल चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को रामनवमी का त्योहार मनाया जाता है। शास्त्रों की मानें तो चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था। इसलिए इस दिन को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है। इस बार 17 अप्रैल को रामनवमी है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, रामनवमी के शुभ अवसर पर घर में उचित दिशा में राम दरबार की प्रतिमा या मूर्ति स्थापित करने से साधक को जीवन में अपार खुशियां प्राप्त होती हैं और कई तरह के फायदे मिलते हैं। अगर आप भी रामनवमी पर घर में राम दरबार की प्रतिमा या मूर्ति विराजमान कर रहे हैं, तो आपको इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि राम दरबार किस दिशा में लगाना शुभ होता है।

इस दिशा में लगाएं राम दरबार-वास्तु शास्त्र के अनुसार, राम दरबार की तस्वीर या मूर्ति घर की पूर्व दिशा में लगाना शुभ होता है। माना जाता है कि घर में राम दरबार उचित दिशा में लगाने से परिवार के सदस्यों के बीच सदैव सुख-शांति बनी रहती है। साथ ही वास्तु दोष से छुटकारा मिलता है। वास्तु शास्त्र में वर्णन किया गया है कि घर में उचित दिशा में राम दरबार की मूर्ति या तस्वीर लगाने से इंसान के जीवन की सभी तरह की समस्याएं खत्म होती हैं। श्रीराम दरबार में भगवान श्री राम पत्नी सीता, भाई लक्ष्मण और भक्त हनुमान के साथ बैठे हैं। यह दरबार भगवान राम के राज्य और उनके नियमों को दर्शाता है।

राम दरबार की पूजा मिलते हैं फायदे-धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, राम दरबार की विधिपूर्वक पूजा करने से साधक को भगवान राम, मां सीता, भगवान लक्ष्मण के साथ-साथ हनुमान जी की भी कृपा प्राप्त होती है। साथ ही इंसान के बिगड़े हुए कार्य पूरे होने लगते हैं। ऐसा माना जाता है कि रोजाना राम दरबार की पूजा करने से सुख-शांति की प्राप्ति होती है।

पूरी दुनिया में तेजी से फैल रहा है सनातन हिंदू धर्म

प्रहलाद सबनानी

ऐसा कहा जाता है कि जब इस दुनिया में कोई भी धर्म नहीं था तब इस धरा पर निवास करने वाले लोग केवल सनातन हिंदू धर्म का ही पालन करते थे। सनातन हिंदू धर्म बहुत ही ज्यादा संयमित धर्म है जो किसी अन्य धर्म की ना तो उपेक्षा करता है और न ही वह अपने धर्म के वर्चस्व को सबके सामने रखने का प्रयास करता है। इसी कारण से कट्टरता के इस माहौल में आज पूरे विश्व में सनातन हिंदू धर्म के प्रति लोगों की आस्था एवं रुचि बढ़ रही है।

पूरे विश्व में आज विभिन्न देशों के नागरिकों में शांति का अभाव दिखाई दे रहा है एवं परिवार के सदस्यों के बीच भी भाईचारे की कमी दिखाई दे रही है। शादी के तुरंत बाद तलाक लेना तो जैसे आम बात हो गई है। आज कई विकसित देशों में तलाक की दर 60 प्रतिशत से भी अधिक है। बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करने वाला उनका अपना कोई साथ नहीं है। अमेरिका में तो लगभग 10 लाख बुजुर्ग नागरिक खुले में रहते हुए अपना जीवनयापन करने को मजबूर हैं। इन देशों में तो जैसे सामाजिक तानाबाना ही छिन्न-भिन्न हो गया है।

इसी प्रकार के अन्य कई कारणों के चलते आज सनातन हिंदू धर्म के प्रति विदेशी लोग आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि सनातन हिंदू धर्म का अपना एक अलग ही महत्व है। सनातन हिंदू धर्म में कुटुंब के प्रति वफादारी बचपन से ही सिखाई जाती है। भारत में आज भी संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलन में हैं, जिससे बच्चे अपने बचपन में ही अपने माता पिता की सेवा करने के संस्कार सीखते हैं और उन्हें पूरे जीवन भर अपने साथ रखने का संकल्प लेते हैं।

विश्व में कुछ अन्य धर्मों में बच्चों को बचपन में ही कट्टरता सिखाई जाती है एवं केवल अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म के रूप में पेश किया जाता है। इससे इन बच्चों में अन्य धर्मों के प्रति सद्भावना विकसित नहीं हो पाती है। कई बार तो अन्य धर्म को मानने वाले नागरिकों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें अपना धर्म मानने को मजबूर भी किया जाता है। इसके ठीक विपरीत सनातन हिंदू धर्म किसी अन्य मजहब को मानने वाले व्यक्ति पर कभी भी कोई दबाव नहीं डालता है। सनातन हिंदू संस्कृति अन्य धर्मों के नागरिकों को किसी प्रकार का धर्म मानने की खुली स्वतंत्रता प्रदान करती है।

ऐसा कहा जाता है कि जब इस दुनिया में कोई भी धर्म नहीं था तब इस धरा पर निवास करने वाले लोग केवल सनातन हिंदू धर्म का ही पालन करते थे। सनातन हिंदू धर्म बहुत ही ज्यादा संयमित धर्म है जो किसी अन्य धर्म की ना तो उपेक्षा करता है और न ही वह अपने धर्म के वर्चस्व को सबके सामने रखने का प्रयास करता है। इसी कारण से कट्टरता के इस माहौल में आज पूरे विश्व में सनातन हिंदू धर्म के प्रति लोगों की आस्था एवं रुचि बढ़ रही है।

सनातन हिंदू धर्म आज विश्व में तीसरा सबसे बड़ा धर्म है और भारत में अधिकतर लोग इस धर्म को मानते हैं। एक अनुमान के अनुसार सनातन हिंदू धर्म इस पृथ्वी पर 10,000 वर्षों से हैं। लेकिन यदि वेदों और उपनिषदों में लिखी बातों को माने तो सनातन हिंदू धर्म की उत्पति लाखों वर्ष पहिले हुई थी उस समय ये सनातन धर्म के नाम से जाना जाता था।

हिंदू धर्म को मानने वाले लोग भारत में रहते थे। इस धर्म को बहुत प्रभावशाली माना गया है। अन्य कुछ धर्मों के संस्थापक रहे हैं, जैसे ईसाई धर्म के संस्थापक के रूप में प्रभु यीशु को माना जाता है तथा इस्लाम धर्म के लिए मोहम्मद साहिब को संस्थापक माना जाता है और बौद्ध धर्म के लिए गौतम बुद्ध को संस्थापक जाना जाता है। परंतु हिंदू धर्म के बारे में कहा जाता है कि कुछ संतों एवं महापुरुषों ने एक होकर जीवन को सही तरीके से व्यतीत करने का तरीका विकसित किया था। सनातन हिंदू संस्कृति को, धर्म नहीं बल्कि यह, जीवन जीने का एक तरीका भी माना जाता था।

सनातन हिंदू धर्म का यह मानना है कि प्रभु परमात्मा ने इस धरा पर सबको खुलकर हंसने, उत्सव मनाने और मनोरंजन करने की योग्यता दी है। यही कारण है कि सनातन हिंदू धर्म में सबसे अधिक त्यौहार और संस्कार होते हैं। उत्सव, जीवन में सकारात्मक संदेश लेकर आते हैं और हमारे संस्कार मिलन सरिता को दर्शाते हैं। सनातन हिंदू धर्म की यही प्रक्रिया दुनिया पसंद करती है। तभी तो ब्रज की होली और कुम्भ के मेले का अवलोकन करने के लिए पूरी दुनिया से लोग भारत में आते हैं। यही एक कारण है कि आज पूरी दुनिया के कोने कोने में लोग हिंदू धर्म में अपनी रुचि दिखा रहे हैं।

हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन के अनुसार, आबादी के लिहाज से दुनिया के तीसरे सबसे बड़े देश अमेरिका में अब हिंदूओं की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और हिंदू वहां राजनैतिक रूप से भी सक्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, कोरोना महामारी के बाद से पूरे अमेरिका एवं विश्व के अन्य देशों में योग और ध्यान की ओर लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। योग और ध्यान पूरे विश्व को सनातन हिंदू धर्म की ही देन है। सनातन हिंदू धर्म बिलकुल ही कट्टरपंथी धर्म नहीं है। अन्य धर्मों की तरह इसमें किसी भी प्रकार का सामाजिक दबाव नहीं हैं।

सदैव अनुकरणीय रहेंगे भगवान श्रीराम के आदर्श...

योगेश कुमार गोयल

समूचे भारतवर्ष में प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष नवमी को रामनवमी का त्यौहार भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जो इस वर्ष 17 अप्रैल को मनाया जा रहा है। मान्यता है कि त्रेता युग में इसी दिन अयोध्या के महाराजा दशरथ की पटरानी महारानी कौशल्या ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को जन्म दिया था। रामनवमी के दिन श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में उत्सवों का विशेष आयोजन होता है, जिनमें भाग लेने के लिए देशभर से हजारों भक्तगण अयोध्या पहुंचते हैं। अयोध्या के भव्य राम मंदिर में जनवरी में हुई भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के बाद इस बार पहली बार रामनवमी बेहद खास होगी। समूची अयोध्या नगरी इस दिन पूरी तरह राममय नजर आएगी और हर तरफ भजन-कीर्तन तथा अखण्ड रामायण के पाठ की गूंज सुनाई पड़ेगी। रामनवमी के अवसर पर भगवान राम के दर्शन के लिए इस बार लाखों लोगों के अयोध्या पहुंचने का अनुमान है और इसके लिए खास प्रबंध किए गए हैं।

विधि-विधान के अनुसार भगवान श्रीराम को दुष्ट राक्षसों का विनाश करने के लिए ही वनवास मिला था। उन्होंने अपने मानव अवतार में न तो भगवान श्रीकृष्ण की भांति रासलीलाएं खेलीं और न ही कदम-कदम पर चमत्कारों का प्रदर्शन किया बल्कि उन्होंने सृष्टि के समक्ष अपने क्रियाकलापों के जरिये ऐसा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी वजह से उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा गया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में सभी के प्रति प्रेम की अगाध भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनकी प्रजा वात्सल्यता, न्यायप्रियता और सत्यता के कारण ही उनके शासन को आज भी 'आदर्श' शासन की संज्ञा दी जाती है और आज भी अच्छे शासन को 'रामराज्य' कहकर परिभाषित किया जाता है। श्रीराम का चरित्र बेहद उदार प्रवृत्ति का था। उन्होंने उस अहिल्या का भी उद्धार किया, जिसे उसके पति ने देवराज इन्द्र द्वारा छलपूर्वक उसका शीलभंग किए जाने के कारण पतित घोषित कर पत्थर की मूर्ति बना दिया था। जिस अहिल्या को निर्दोष मानकर किसी ने नहीं अपनाया, उसे भगवान श्रीराम ने अपनी छत्रछाया प्रदान की। लोगों को गंगा नदी पार कराने वाले एक मामूली से नाविक केवट की अपने प्रति अपार श्रद्धा व भक्ति से प्रभावित होकर भगवान श्रीराम ने उसे अपने छोटे भाई का दर्जा दिया और उसे मोक्ष प्रदान किया। अपनी परम भक्त शबरी नामक भीलनी के झूठे बेर खाकर शबरी का कल्याण किया।

ममता दीदी! बंगाल में स्त्री अस्मिता लुट रही और आप तुष्टिकरण में लगी हैं

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

कहने को कहा जाता है कि जिसने दर्द नहीं सहा, वह क्या जानें पीर पराई, ममता बनर्जी को लेकर जब उनके प्रशंसक उनका गुणगान करते हैं तो यही बताते हैं कि बहुत संघर्ष भरा है ममता दीदी का राजनीतिक जीवन । वह 1992 का दिसम्बर महीना विशेष तौर पर याद दिलाना नहीं भूलते, जब एक शारीरिक रूप से अक्षम लड़की फेलानी बसाक (जिसका कथित तौर पर सीपीआई(एम) कार्यकर्ताओं द्वारा बलात्कार किया गया था) को वह तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु के पास ले गई थीं, लेकिन पुलिस ने उन्हे उलटा गिरफ्तार कर लिया था। यानी दीदी के प्रशंसक यह जरूर बताते हैं कि उनका राजनीतिक सफर स्त्री अस्मिता के लिए संघर्ष करनेवाली बुलंद आवाज के रूप में शुरू हुआ है। लेकिन आज इस प्रशंसा के इतर हकीकत क्या है पश्चिम बंगाल की कहीं कोई सुरक्षित नहीं, पूरे बंगाल में दंगे कभी भी भड़क सकते हैं। वस्तुत: ममता राज में कोई एक वर्ष भी ऐसा नहीं गुजरा है जब रामनवमी, दुर्गा उत्सव या अन्य हिन्दू त्यौहारों पर शांति बनी रही हो और इस्लामिक भीड़ ने पत्थर न बरसाए हों। अक्सर आतंकवादी पश्चिम बंगाल के अलग-अलग स्थानों से पकड़े जाते हैं। बेंगलुरु ब्लास्ट के आतंकी भी यहीं आकर छिपे थे। हां, बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में ब्लास्ट करने वाले मुख्य आरोपित को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पश्चिम बंगाल से गिरफ्तार किया है। दोनों ही कोलकाता से हिरासत में लिए गए। शाजिब हुसैन ने कैफे में आईईडी रखा था जबकि अब्दुल मतीन ताहा ने धमाके की साजिश रची थी।

जिन ममता दीदी के राजनीतिक जीवन को स्त्री अस्मिता से जोड़ा जाता है, उसी ममता के राज में आज संदेशखाली जैसी घटनाएं वर्षों से घट रही हैं। अभी यदि चप्पे-चप्पे की जांच हो जाए तो पता नहीं बंगाल में न जाने कितने ही संदेशखाली निकलकर सामने आ जाएंगे। दूसरी ओर ममता दीदी की ममता है कि सत्ता के लिए अपराधियों को लगातार संरक्षण देती है। एक स्त्री होकर स्त्री अत्याचार पर ममता की चुप्पी, पुलिस को अत्याचारियों के स्थान पर पीड़ितों पर ही अत्याचार करने की छूट दे देना, आखिर क्या बता रहा है यही कि ममता बनर्जी वक्त के साथ इतनी बदल गईं कि उनके लिए राजनीति ही सब कुछ हो गई है। वह अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। पश्चिम बंगाल में एक नहीं कई संदेशखाली भी सामने आ जाएं तो भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता ! उनकी सत्ता हर हाल में बनी रहना चाहिए।

वह तो अच्छा है कि देश में न्यायालय है, केंद्र सरकार है, कई राष्ट्रीय एजेंसियां हैं, आयोग हैं, जोकि पीड़ित का पक्ष सुनने के लिए मौजूद हैं और उसके आधार पर राज्य सरकारों को निर्देश देने तथा पीड़ित को संरक्षण प्रदान करने की व्यवस्था मुहैया कराने में सक्षम हैं। यदि यह नहीं होते तो सोचिए; ममता बनर्जी अपनी सत्ता का और कितना अधिक दुरउपयोग करतीं, जब अभी राज्य में पुलिस प्रशासन एवं तुष्टिकरण का यह हाल है!

वस्तुत: संदेशखाली मामले में सुनवाई जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, न्यायालय के सामने कई चौंकाने वाले साक्ष्य सामने आ रहे हैं। कई आयोग अपने स्तर पर सही तथ्यों को जानने का प्रयास कर रहे हैं और वे अब तक जितना जान पाए उसके आधार पर वह बहुत असहज हैं कि आखिर एक स्त्री होकर भी ममता को पश्चिम बंगाल की स्त्रियों का दर्द क्यों नहीं अनुभूत हुआ। वह इतना सब होने के बाद अब भी क्यों नहीं समझना चाहतीं अपने राज्य की स्त्रियों की समस्याएं और उनका भोगा हुआ दर्द से भरा यथार्थ ।

यहां स्थिति कितनी भयाभह होगी, इसका तो सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है, क्योंकि कलकत्ता हाई कोर्ट तक को संदेशखाली मामले की जांच अपनी निगरानी में सीबीआई से करवाने के निर्देश देने तक की आवश्यकता महसूस हुई है । टीएमसी के पूर्व नेता शाहजहां शेख पर संदेशखाली की महिलाओं का यौन उत्पीड़न करने, जमीन कब्जाने और जबरन वसूली जैसे न जाने कितने ही आरोप हैं। हद तो यह है कि जब न्यायालय हस्तक्षेप करता है और निर्देश देता है, तब कहीं जाकर ममता की बंगाल पुलिस शाहजहाँ शेख, शिबू हाजरा और उत्तम सरदार को गिरफ्तार कर जेल भेजती है, अन्यथा तो अपने संरक्षण में इन्हें और इन जैसे न जाने कितने ही मानवता के शत्रु गुण्डों को यह संरक्षण दे ही रही है

कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश में कहा गया है कि संदेशखाली यौन उत्पीड़न, बलात्कार और अन्य मामलों में हाई कोर्ट की निगरानी में सीबीआई जांच होगी । पश्चिम बंगाल सरकार सीबीआई अधिकारियों और संदेशखाली के पीड़ितों को पर्याप्त सुविधाएँ और सुरक्षा प्रदान करेगी। हाई कोर्ट ने केंद्रीय जांच ब्यूरो को मछली पालन के लिए कृषि भूमि के अवैध रूपांतरण पर रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। वहीं, राज्य सरकार को आदेश दिया कि 15 दिनों के अंदर संदेशखाली के इलाके में सीसीटीवी कैमरे लग जाने चाहिए। जरूरत के हिसाब से एलईडी लगाए जाएं। इन सबका खर्च बंगाल सरकार उठाएगी । कहना होगा कि न्यायालय के आदेश के बाद अब पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी की सरकार सीबीआई जांच पर रोक नहीं लगा पाएगी। साथ ही जमीन हड़पने और ईडी पर हमले के मामले में पहले से ही सीबीआई जांच चल रही है।